B.A. Part 1
Paper 1st

By - Dr. ... deptt. of economics Raja Singh college Siwan

## वितरण का सिद्धान्त :
## (Theories of distribution)

### व्यक्तिगत वितरण तथा फलनात्मक वितरण
### (Personal Distribution and functional Distribution)

अर्थशास्त्र में वितरण का सम्बन्ध आय के व्यक्तिगत वितरण तथा फलनात्मक वितरण से है। व्यक्तिगत वितरण का संबंध उन शक्तियों से है जो किसी देश में विभिन्न व्यक्तियों में आय और सम्पत्ति के बँटवारे को शासित करती हैं। मकान या भूमि के एक टुकड़े का किराया या लगान दूसरे की अपेक्षा क्यों कम या अधिक है? ये और ऐसी अन्य समस्याओं का आय के व्यक्तिगत वितरण में अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, आय के व्यक्तिगत वितरण के अन्तर्गत हम आय एवं सम्पत्ति में ~~असमा~~ असमानता की समस्या, उसके प्रभाव तथा उसको कम या दूर करने के उपायों का अध्ययन करते हैं।

~~दूसरी~~ दूसरी ओर, फलनात्मक वितरण या साधन- हिस्सा वितरण उत्पादन के प्रत्येक साधन द्वारा कुल राष्ट्रीय आय के हिस्से की व्याख्या करता है। दूसरे शब्दों में, इसका संबंध उत्पादन के साधनों को उनकी सेवाओं के लिए बाँटे गए पुरस्कार से है। लगान, मजदूरी, ब्याज और लाभ क्रमशः भूमि, श्रम, पूँजी और उद्यम की सेवाओं के पुरस्कार हैं। गणितीय भाषा में यह कहा जा सकता है: $P=F(A,B,C,D)$, जहाँ कुल उत्पादन या आय P फलन F है, A भूमि, B श्रम, C पूँजी तथा D संगठन का। अतः फलनात्मक वितरण विभिन्न उत्पादन के साधनों के हिस्सों तथा कीमतों को निर्धारित करने वाली शक्तियों का अध्ययन करता है।

व्यक्तिगत वितरण तथा फलनात्मक वितरण ~~या साधन- हिस्सा वितरण उत्पादन के प्रत्येक साधन द्वारा कुल~~ २ में इन स्पष्ट भिन्नताओं के पाए जाने के बावजूद दोनों में निकट का संबंध है। एक देश में व्यक्तिगत वितरण अन्ततः आय के फलनात्मक वितरण में ~~इन स्पष्ट~~ द्वारा प्रभावित होता है। यदि उत्पादन के साधनों को पुरस्कार न्यायोचित है तो व्यक्तिगत आय का वितरण भी न्यायोचित होगा। परिणामस्वरूप, व्यक्तिगत आय ऊँची होती है। सेवाओं एवं वस्तुओं के लिए माँग अधिक होती है जिससे

Scanned by CamScanner

अधिक निवेश, अधिक रोजगार, और अधिक उत्पादन तथा अधिक राष्ट्रीय आय होते हैं। ऊँची व्यक्तिगत आयों से अभिप्राय है ऊँचा रहन-सहन का स्तर तथा उत्पादन में अधिक दक्षता का होना। दूसरी ओर यदि आय का फलनात्मक वितरण न्यायोचित नहीं है तथा उत्पादन के साधनों के शोषण पर आधारित है तो व्यक्तिगत आय भी अन्यायपूर्ण होगी। परिणामस्वरूप अधिकतर लोग गरीब होंगे। आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण में कमी होगी तथा गरीबों और अमीरों में निरंतर संघर्ष के कारण देश में शान्ति एवं समृद्धि में रुकावट होगी। ~~इस अध्याय में~~

साधन-कीमत निर्धारण की समस्या क्लासिकी अर्थशास्त्रियों से लेकर नव-केन्जवादियों तक चर्चा का विषय रही है परन्तु उसके संबंध में अब तक कोई एकमत स्थापित नहीं हो पाया ~~है~~ है। प्रो० कॉलडर ने वितरण के सिद्धांतों को 4 प्रमुख वर्गों में बाँटा है: एक, ~~रिकार्डो~~ रिकार्डो का या क्लासिकी सिद्धान्त; दो, मार्क्स-सिद्धान्त; तीन, नवक्लासिकी या सीमान्तवादी सिद्धान्त जिसके दो ~~अ~~ उपवर्ग हैं: (i) सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त और (ii) 'एकाधिकार की ~~कोटि~~ कोटि' का सिद्धान्त और चार, केन्ज का सिद्धान्त।